भारतीय जनता पार्टी

राष्ट्रीय कार्यकारिणी की बैठक

नई दिल्ली (20–21 जून 2009)

श्री लालकृष्ण आडवाणी द्वारा समापन भाषण

श्री राजनाथ सिंह जी, पार्टी पदाधिकारीगण और और राष्ट्रीय कार्यकारिणी के प्रिय सदस्यो

15वीं लोकसभा चुनावों के बाद हम पहली बार मिल रहे हैं। सबसे पहले मैं लोकसभा के सभी 116 नए निर्वाचित सदस्यों जिनमें 58 पहली बार सदस्य बने हैं, को बधाई देता हूं। मैं भाजपा संसदीय पार्टी के नये निर्वाचित पदाधिकारियों– लोकसभा में प्रतिपक्ष की उपनेता श्रीमती सुषमा स्वराज, राज्य सभा में प्रतिपक्ष के नेता श्री अरुण जेटली, राज्य सभा में प्रतिपक्ष के उपनेता श्री एस. एस. अहलूवालिया और दोनों सदनों के मुख्य सचेतकों को भी बधाई देता हूं।

इस अवसर पर मैं उन सभी को हार्दिक धन्यवाद देता हूं जिन्होंने केन्द्र, राज्य और चुनाव क्षेत्रों में पार्टी के चुनाव अभियान में अथक और परिश्रमपूर्वक कार्य किया है। भारतीय जनता पार्टी के वफादार कार्यकर्ताओं ने एक बार फिर उल्लेखनीय प्रतिबद्धता, निष्ठा और समर्पण की भावना प्रदर्शित की है। ये वे गुण हैं जिनके लिए हमारे कार्यकर्ता जाने जाते हैं और जिनके लिए उनकी सराहना की जाती है।

हम सभी को वास्तव में संसदीय चुनावों के परिणाम से काफी हताशा और निराशा हुई है जो हमारे अपेक्षा के अनुरुप नहीं रहे। कांग्रेसनीत संयुक्त प्रगतिशील गठबंधन (यूपीए) को नए सिरे से और पहले से अधिक जनादेश प्राप्त हुआ। चुनावों में हमारी सदस्य संख्या वर्ष 2004 से भी कम अर्थात 138 से घटकर 116 रह गई है।

चुनाव परिणामों की व्यापक समीक्षा जरुरी

राष्ट्रीय कार्यकारिणी में इस बात पर व्यापक चर्चा हुई है कि हम जनता का जनादेश हासिल करने में क्यों विफल रहे। अनेक सहयोगियों ने अपनी टिप्पणियां की हैं और विश्लेषण किए हैं। इस समीक्षा का उद्देश्य किसी पर कोई दोष मढ़ना नहीं है बल्कि एक ऐसी सही समझ विकसित करनी है कि हम कहां पर गलत रहे और सबसे महत्वपूर्ण बात यह है कि उन गलतियों को सुधार कर हमारी पार्टी किस तरह से और अधिक मजबूत होकर उभरे। मुझे इस बात की बहुत प्रसन्नता है कि कल काफी खुलकर और स्पष्ट रुप से चर्चा हुई।

अत्यधिक आंतरिक लोकतंत्र पर गर्व करने वाली पार्टी होने के नाते, हमारा यह प्रयास होना चाहिए कि इस कार्य को किस तरह से अधिक से अधिक व्यापक बनाया जाए। इससे हमारे कार्यकर्ताओं और सभी स्तरों पर समर्थकों को अपने विचारों और भावनाओं को खुलकर व्यक्त करने की स्वतंत्रता मिलेगी। उन्हें यह महसूस होना चाहिए कि उनकी आवाज को सुना जाता है और उस पर गंभीर रुप से विचार किया जाता है। यह हमारे केडर और समर्थकों की प्रेरणा और उत्साह को बनाए रखने तथा पार्टी के प्रति उनकी प्रतिबद्धता को अधिक मजबूत बनाने के लिए महत्वपूर्ण है।

इसलिए हमारे सहयोगियों और कार्यकर्ताओं को यह महसूस होना चाहिए कि पार्टी के भीतर एक ऐसा आंतरिक तंत्र है जहां आलोचनात्मक टिप्पणियों और विचारों सहित हरेक की भावनाओं पर पार्टी के जिम्मेदार लोगों द्वारा गंभीरता से सोच–विचार किया जाता है तथा उनका उपचारी कदम उठाने के लिए इस्तेमाल किया जाता है। इस प्रक्रिया में भागीदारों के ऊपर केवल इतना प्रतिबंध है, जो भारतीय जनता पार्टी की अनुशासन संस्कृति का एक महत्वपूर्ण हिस्सा है, कि उन्हें अपने आलोचनात्मक विचारों को सार्वजनिक तौर पर नहीं उठाना चाहिए।

तीन क्षेत्रों पर गंभीर रुप से ध्यान दिये जाने की जरुरत

मोटे तौर पर निम्नलिखित तीन क्षेत्रों में उपचारिक कार्यवाही करने की जरुरत हैः

1. यह खेद का विषय है कि हमारी पार्टी कुछ राज्यों में हाशिए पर चली गई लगती है जहां हमारी मजबूत पकड़ रही थी और जहां कुछ राज्यों में वास्तव में काफी उलट देखने को मिला है। इसके अलावा, ऐसे कई बड़े राज्य हैं जहां हमारा राजनीतिक आधार कम होता जा रहा है और हमारे मतदाताओं की संख्या अभी भी घटती जा रही है। इन खामियों को दूर करना होगा।

2. केन्द्र सहित सभी स्तरों पर पार्टी संगठन की स्थिति में सुधार लाने की जरुरत है। हमें केन्द्र और राज्यों में नेतृत्व स्तरों पर विचारों में एकता, आयोजना में एकता और उसे व्यवहार में लाने में एकता को मजबूत करना होगा।

3. पार्टी को सभी स्तरों पर युवा नेताओं को प्रोत्साहित करने की पद्धति तत्काल विकसित करनी होगी। हमारी पार्टी में काफी युवा प्रतिभाएं मौजूद हैं। लेकिन मैंने कई युवा कार्यकर्ताओं को सुना है जो मुझे बताते हैं कि उन्हें अधिक प्रभावी ढंग से पार्टी की सेवा करने का मौका नहीं दिया जाता है। यह दुःख की बात है कि पार्टी के भीतर एक तरह की ''ट्रेन कंपार्टमेंट'' वाली मानसिकता पैदा हो गई है जिससे नेतृत्व पदों पर बैठे लोगों द्वारा निष्ठावान, प्रतिभाशाली, और प्रतिबद्ध लोगों जो ''बाहर'' खड़े हैं और दरवाजे खुलने की प्रतीक्षा कर रहे हैं, की उपेक्षा की जाती है। इस स्थिति में बदलाव लाना होगा हमें भारतीय जनता पार्टी में तीसरी, चौथी और पांचवीं पीढ़ी के नेताओं का पता लगाना होगा, उन्हें प्रशिक्षित और तैयार करना होगा तथा उन्हें अधिकार देने होंगे। हमारे नेतृत्व आयोजना में इस बात का ध्यान रखना होगा कि पार्टी को अगले 20 सालों के लिए ऐसे नेताओं की जरुरत है।

चुनाव परिणाम धक्का है लेकिन निश्चित रुप से ''घोर पराजय'' नहीं

मित्रो, हालांकि चुनाव परिणामों से हम सभी का निराश होना स्वभाविक है लेकिन यह जरुरी है कि हमें न तो इन परिणामों से पैदा हुई निराशा की भावना हताशा में बदलने देनी है और न ही हमें भारतीय जनता पार्टी के लिए मतदाताओं के समर्थन का मूल्यांकन करने में संतुलन खोना है।

मीडिया के एक वर्ग ने जनता के जनादेश को भारतीय जनता पार्टी के लिए ''घोर पराजय'' बताया है। ऐसी कोई बात नहीं है। हमने 15वीं लोकसभा में 116 सीटें जीती हैं जो कि उससे कहीं ज्यादा हैं जो कांग्रेस ने वर्ष 1999 में जीती थीं। लगभग 113 अन्य चुनाव क्षेत्रों में हमारे उम्मीदवार दूसरे नम्बर पर रहे हैं। इन निर्वाचन क्षेत्रों में से 45 क्षेत्रों में हार का अंतर डाले गये

मतों के 10 प्रतिशत से भी कम रहा। इन निर्वाचन क्षेत्रों में से 25 क्षेत्रों में यह अंतर 5 प्रतिशत से भी कम रहा।

चुनाव परिणामों से हमें जो धक्का लगा है उसे कम आंके बिना मैं यह भी बताना चाहता हूं कि इस बात की तुलना करने में कोई हर्ज नहीं है कि हमने विगत में कितना नुकसान उठाया है। यदि ''घोर पराजय'' शब्द का सही ढंग से इस्तेमाल किया जाए तो ऐसा वर्ष 1980 और 1984 था। वर्ष 1980 के संसदीय चुनावों जो जनता पार्टी की सरकार के विघटन के बाद हुए थे, में जनता पार्टी के सदस्यों की संख्या 1977 में 295 (जनसंघ के सदस्यों की संख्या लगभग 97 थी) से घटकर 31 रह गई जिनमें जनसंघ के सदस्यों के संख्या मात्र 18 थी। 1984 के चुनाव जो श्रीमती इंदिरा गांधी के हत्या के बाद हुए थे, में भारतीय जनता पार्टी पूरे देश में केवल दो सीटें ही जीत सकी थी।

हम सन् 1980 और सन् 1984 में भी हताश नहीं हुए थे। इसलिए आज भारतीय जनता पार्टी के निराश होने का प्रश्न ही कहां पैदा होता है जबकि लोक सभा में आज हमारे 116 सांसद हैं। जबकि चौदहवीं लोकसभा में वामपंथी एक तरफ सरकार में सक्रिय भागीदार थे लेकिन वे सरकार की विफलताओं के लिए जबावदेह नहीं थे। उन्होंने अधिकांश समय प्रतिपक्ष की भूमिका भी अदा की।

मैं सबसे पहले सन् 1970 में राज्य सभा सदस्य के रुप में संसद में आया था। वह एक ऐसा समय था जब मार्क्सवादी सदस्य काफी भरोसा जताया करते थे। उनमें से कुछ अंग्रेजी साम्राज्यवादियों जैसी भी डींगें मारा करते थे कि निश्चित रुप से एक दिन ऐसा भी आएगा जब मार्क्सवादी ''साम्राज्य'' में सूरज अस्त नहीं होगा। भारत सहित विश्व के सभी विकसित देश मार्क्सवादियों की अपील के प्रति विशेष रुप संवेदनशील रहे : जनसंघ का कोई भविष्य नहीं है।

और देखिए, विश्व भर में मार्क्सवादी पार्टियों का क्या हश्र हुआ! ये पार्टियां विश्व के नक्शे से ही ओझल हो गई है– इनके कुछ अवशेष केवल क्यूबा, केरल और कोलकाता में ही बचे हैं। और भारत में जबकि हमें एक चुनाव जिसमें आश्चर्यजनक रुप से धक्का लगा है, 116 सींटे मिली हैं और उन्हें केवल 16 सीटें ही हासिल हुई हैं।

हमारे प्रति पूर्वाग्राही आलोचक जानबूझकर भारतीय जनता पार्टी की कमजोरियों को बढ़ा चढ़ा कर बताएंगे लेकिन हमें अपनी शक्ति को पहचानना होगा। लोकसभा में हमारे 116 सांसद, राज्य सभा में 47 सांसद हैं तथा 8 राज्यों में हमारी पार्टी की सरकारें हैं। इसलिए भारतीय जनता पार्टी किसी भी तरह से भारतीय राजनीति में कोई नगण्य ताकत नहीं है। हाल के चुनावों में तीसरे और चौथे मोर्चे का सफाया हो गया है, भारतीय जनता पार्टी कांग्रेस के एकमात्र विकल्प के रुप में उभर कर सामने आई है।

मैं मई 2009 में जनता के जनादेश के एक महत्वपूर्ण पहलू को रेखांकित करने के लिए इसका उल्लेख कर रहा हूं। जनता ने मत देकर कांग्रेस पार्टी की सदस्य संख्या को इसलिए यथेष्ठ रुप से बढ़ाया है कि केन्द्र में एक स्थिर सरकार आए ताकि वह वाममोर्चे के चंगुल में अधिक समय तक न फंसी रहे। जनता ने दोध्रुवीय राजनीति के लिए भी मत दिया है। मतदाताओं ने केन्द्र में एक मात्र गैर–कांग्रेसी प्रतिपक्ष ध्रुव बनाने के लिए भारतीय जनता पार्टी को समर्थन दिया है।

भारतीय जनता पार्टी के लिए बड़ा नया अवसर

जब मुझसे कोई यह पूछे कि भारतीय राजनीति में भाजपा का अत्यधिक महत्वपूर्ण योगदान क्या है तो मेरा उत्तर यह होगाः भारत की स्वतंत्रता के पहले चार दशकों में देश की राजनीति में एक अकेली पार्टी–कांग्रेस ही हावी रही थी; पिछले दो दशकों में भारतीय जनता पार्टी इस एकल प्रभुत्व वाली पार्टी की राजनीति को दो–ध्रुवीय राजनीति में बदलने में सफल रही है।

डा. श्यामा प्रसाद मुखर्जी द्वारा जनसंघ के रुप में हमारी पार्टी की नींव रखने के दिनों से लेकर पार्टी नेतृत्व भारतीय राजनीति में कांग्रेस पार्टी के वर्चस्व को समाप्त करने का प्रयास करता रहा है। गठबंधन की राजनीति और पंजाब में 50 के दशक के शुरु में आरम्भ हुई गठबंधन वाली सरकारों। जब न्यायमूर्ति गुरुनाम सिंह के नेतृत्व में हमारी एसएडी– जनसंघ सरकार थी, के समय से इस दिशा में हमारे प्रयास जारी हैं। बाद में हमने हिन्दी भाषी राज्यों में कांग्रेस पार्टी के वर्चस्व को तोड़ने की दिशा में बड़ा योगदान दिया है जब हमने सन् 1967 में बिहार, उत्तर प्रदेश और मध्यप्रदेश में संयुक्त विधायक दल (एसवीडी) सरकारों के गठन में मदद की थी। श्री जयप्रकाश नारायण के नेतृत्व में जनसंघ द्वारा 70 के दशक के शुरु में भ्रष्टाचार विराधी तथा आपातकाल विरोधी अभियान में निभाई गई महत्वपूर्ण भूमिका इस प्रयास में मील का पत्थर साबित हुई।

1989 का चुनाव कांग्रेस के लिए निर्णायक था। तब से भाजपा ने पीछे मुड़कर नहीं देखा जब तक कि वह 1996 में लोकसभा में सबसे बड़ी पार्टी बनकर नहीं उभरी और फिर 1998 में पहली एनडीए सरकार बनाई जो 6 वर्ष तक चली।

डा. मुखर्जी और पंडित दीन दयाल उपाध्याय के अलावा अन्य राष्ट्रीय नेताओं डा. लोहिया, जयप्रकाश नारायण, श्री अटल बिहारी वाजपेयी, श्री जार्ज फर्नाडिज और श्री मधु लिमये जैसे नेताओं ने भी सत्ता से कांग्रेस के एकाधिकार को समाप्त करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई।

कांग्रेस पार्टी के एकाधिकार को समाप्त करने में भाजपा की सफलता अनेक छोटी–छोटी पार्टियों जाति–आधारित पार्टियों तथा कई क्षेत्रीय पार्टियों की महत्वकांक्षा को बढ़ाने की जिम्मेदार रही हैं।

मेरे विचार में, वर्ष 2004 की तरह जबकि इस बार लोकसभा चुनाव राज्यों में अलग–अलग जनादेशों का एक संकलन था, जनता का आम मिजाज जो इस आखिरी चुनाव में देश भर में मतदाता के मानस पर हावी रहा कि केन्द्र सरकार ऐसी छोटी–छोटी पार्टियों के हाथों में नहीं आनी चाहिए। इसमें कोई आश्चर्य नहीं कि सिर्फ दो पार्टियों– कांग्रेस और भाजपा की 15वीं लोकसभा में सदस्य संख्या तीन अंकों तक पहुची हैं और अन्य सभी दल पीछे रह गए हैं। सन् 2009 के जनादेश में स्वतः ही राष्ट्रीय राजनीति में दो ध्रुवों को स्वीकार किया है।

सन् 2009 के लोकसभा चुनावों के पश्चात् सार्वजनिक रुप से और हमारी पार्टी के भीतर भी दो अन्य मुद्दे उठाये गये हैं। ये हैं–राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ से भाजपा का संबध और हिन्दुत्व का सही अर्थ।

यही दोनों मुद्दे 1979–1980 में जब हम जनता पार्टी में थे, सार्वजनिक बहस का मुद्दा बने थे। वाजपेयीजी, नानाजी देशमुख, सुंदर सिंह भंडारी, मैं और अनेक जो राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ से संबंध रखते थे, को कहा गया कि यदि आपको जनता पार्टी में रहना है तो राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ

से अपने संबंध तोड़ दो। जब हमने इससे मना किया तो जनता पार्टी ने हमें बाहर कर दिया। वह 6 अप्रैल, 1980 का दिन था जब भाजपा जन्मी।

हम वास्तव में इस कदम के लिए जनता पार्टी के आभारी हैं क्योंकि यदि वे यह कदम नहीं उठाते तो भारतीय राजनीति में हम वह उल्लेखनीय सफलता हासिल नहीं कर पाते, जो आज की है।

भारतीय जनता पार्टी में मेरे जैसे अनेक लोगों के लिए राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ से संबंध जीवन परिवर्तित करने वाली घटना है। मैं मानता हूं कि डा. हेडगवार का राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ आधुनिक भारत का पुण्य जनान्दोलन है जैसाकि 19वीं शताब्दी में स्वामी दयानन्द का आर्य समाज और स्वामी परमहंस का रामकृष्ण मिशन जैसे दो महान सांस्कृतिक आंदोलन।

दो दिन पूर्व ही पार्टी पदाधिकारियों की बैठक में हमारे दो प्रमुख मुस्लिम सहयोगियों ने हिन्दुत्व में अपनी आस्था दोहराई लेकिन इसकी संकुचित मुस्लिम विरोधी व्याख्या के विरुद्ध भी सचेत किया।

जब 1979–1980 में जनता पार्टी में हिन्दुत्व के मुद्दे पर बहस चल रही थी तब राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के सर–संघचालक श्री बाला साहेब देवरस ने नागपुर के वार्षिक विजया दशमी संबोधन में कहा था :

''कुछ लोगों द्वारा यह कहा गया है कि संघ बदल रहा है और इसे बदलना भी चाहिए। सभी सजीव वस्तुओं में स्वभाविक रुप से परिवर्तन होता है। यह उनके विकास का चिन्ह है। जो परिवर्तित नही होता वह जीवित नहीं, मृत है। लेकिन यह परिवर्तन जीवनदायिनी धमनियों से स्वयं को काट कर नहीं होता। संघ भी समय की आवश्यकताओं के अनुरुप परिवर्तित हुआ है और भविष्य में भी परिवर्तित होता रहेगा। हिन्दू राष्ट्र की वृहद अवधारणा पर बल और अन्य मतों के बन्धुओं को अपनी दैनंदिन गतिविधियों में शामिल करने जैसे परिवर्तन आज भी हो रहे हैः लेकिन ऐसे परिवर्तन तभी हो सकते हैं जब स्वयंसेवक ही इन्हें देश हित में आवश्यक महसूस करें।''

अपने संबोधन में श्री देवरस ने राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ द्वारा मजहबी राज्य की संकल्पना को अस्वीकार करने को दोहराते हुए पूछा था ''एकम् सत् विप्रा बहुधा वदन्ति'' में विश्वास करने वाले लोग कैसे एक ऐसे राज्य की वकालत कर सकते हैं जिसमें दूसरों की कीमत पर एक धर्म के हितों को ऊपर रखा जाता होगा।

श्री देवरस ने हिन्दू शब्द के संकुचित उपयोग करने की प्रवृत्ति पर दुःख प्रकट करते हुए कहा था मानों यह कोई संकुचित और साम्प्रदायिक हो। उन्होंने कहा कि ''यह शब्द न केवल धार्मिक पंथ या भौगोलिक सीमाओं को दर्शाता है अपितु एक सांस्कृतिक जीवनधारा को प्रतिबिम्बत करता है जो सदियों से सत्त संवाद के जरिए परिष्कृत होती रही है।'' उन्होंने आगे जोड़ा '' यह हमारा दृढ़ विश्वास है कि हिन्दू और भारतीय, हिन्दू राष्ट्र और भारतीय राष्ट्र जैसे शब्द समानार्थी है।''

प्रत्येक धर्म के मानने वाले भारतीय नागरिकों को यह जान लेना चाहिए कि हिन्दुत्व के बारे में भाजपा की समझ सर्वोच्च न्यायालय की तीन सदस्यीय पीठ के 11 दिसम्बर, 1995 के सर्वसम्मत निर्णय जैसी ही है।

तीसरे मोर्चे और चौथे मोर्चे के अवसान में हमारी पार्टी के लिए एक नया बड़ा अवसर छुपा है। राष्ट्रीय राजनीति के प्रत्येक प्रेक्षक को अब यह स्पष्ट हो गया है कि आने वाले वर्षों में कांग्रेस के विरोध में सही और प्रभावी विपक्ष भाजपा के इर्द–गिर्द ही विकसित हो सकता है जिनके लिए कांग्रेस के विकल्प की तुलना में भाजपा के प्रति ज्यादा घृणा है, वे या तो कांग्रेस की ओर जाएंगे या राष्ट्रीय राजनीति में अप्रासंगिक बन जाएंगे।

भाजपा के पास अवसर है कि वह अपने आस–पास के लोगों, दलों को इक्ठ्ठा कर कांग्रेस के विरुद्ध एक मजबूत, स्थिर और सर्वोत्कृष्ट विकल्प बनाए। आजादी के पश्चात् की भारतीय राजनीति का इतिहास बताता है कि लोग एक ऐसा विकल्प चाहते हैं।

महाराष्ट्र, हरियाणा और झारखण्ड–ये तीन प्रदेश शीघ्र ही नई विधानसभाएं चुनेंगे। भाजपा को अपने सहयोगियों के साथ मिलकर इन तीनों में से कम से कम दो राज्यों में जनादेश जीतने का लक्ष्य रखना चाहिए। इसलिए मैं केन्द्र और इन राज्यों के अपने सहयोगियों से अनुरोध करुंगा कि वे इन आसन्न चुनावों के लिए शीघ्र तैयारियां शुरु करें।

संक्षेप में, आने वाले दिनों में हमें दो काम करने है: (1) भाजपा की अपनी स्वतंत्र शक्ति बढ़ाना, और (2) एनडीए के वर्तमान सहयोगियों और अन्य गैर कांग्रेसी शक्तियों के साथ पार्टी का समन्वय बढ़ाना। मुझे कोई संदेह नहीं है कि हमारी पार्टी इन दोनों कार्यों को करते हुए फिर से वापस आएगी।

पार्टी कार्यकर्ताओं को अवसरों और अपने कार्यों को बताने के उद्देश्य से, मैंने आने वाले महीनों में समूचे देश का दौरा करने का निर्णय लिया है। मैं सभी प्रदेशों में जाऊंगा और कुछ बड़े प्रदेशों में एक से ज्यादा स्थानों का दौरा करुंगा।

मैं अपनी टिप्पणियों की समाप्ति इस संक्षिप्त संदेश के रुप में समाहित करना चाहता हूं। सच है कि 2009 के चुनावों में अपेक्षा के अनुरुप नतीजे नहीं आए। इसका हमें ईमानदारी से आत्मचिंतन करना है। लेकिन आत्मचिंतन आरोप लगाने से अलग है। आइए, इन चुनावी परिणामों को हम एक परिपक्व और उच्च समत्थानशील राजनीतिक पार्टी के रुप में स्वीकारें। सही है कि हमें अपनी कमजोरियों को पहचानना होगा। लेकिन ऐसा करते समय हमें अपनी हमारी राष्ट्रवादी विचारधारा, समर्पित कार्यकर्ताओं की हमारी सेना, प्रतिभाशाली नेताओं की कतार और इन सबसे ऊपर, भाजपा के प्रति लोगों का समर्थन और सद्भावना को नजर अंदाज न होने दें।

सिर्फ हम ही निराश नहीं हुए हैं अपितु हमारे असंख्य समर्थक भी बराबर निराश हुए हैं कि हम कांग्रेस को नहीं हरा सके। लोगों की भाजपा से ऊंची आशाएं और अपेक्षाएं है। आइए, उन अपेक्षाओं को पूरा करने के लिए हम तैयार हों।

धन्यवाद

वन्देमातरम्